श्री कामेश्वर सिंह "सहायक प्रोफेसर"
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कालेज सासाराम
वर्ग- बी०ए० पार्ट-III 'प्रतिष्ठा'; पत्र- VI
राजनीतिक विचारक- डॉ० पुखराज जैन
यूनिट नं०- 27; दिनांक- 15-05-2020,

शेष भाग

हॉब्स और लॉक की तुलना — रूसो के सामाजिक समझौते के सिद्धांत हॉब्स और लॉक के सिद्धांत का मिश्रण है। हॉब्स के समान और लॉक के विपरीत रूसो भी समझौता द्वारा व्यक्ति को पूर्णतः पराधीन कर देता है, व्यक्ति के समस्त अधिकारों का समर्पण करवाता है।

इन मिश्रण के बावजूद रूसो का समझौता सिद्धांत हॉब्स और लॉक दोनों के सिद्धांतो से भिन्न है। हॉब्स का संप्रभु एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों का समूह है, रूसो का संपूर्ण समाज हॉब्स शक्ति को न्याय का स्रोत मानता है, रूसो शक्ति को राज्य शक्ति पर आधारित है।

इसप्रकार लॉक और रूसो में भी अंतर है। लॉक का समझौता एक निश्चित समय में होने वाला एक विशेष कार्य है, रूसो का समझौता निरंतर जारी रहने वाली प्रक्रिया है। लॉक का समझौता एक ऐतिहासिक तथ्य है, रूसो का एक दार्शनिक विचार। लॉक के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में प्राकृतिक कानून विद्यमान रहता है, रूसो में नहीं। लॉक

समुदाय सार्वजनिक हित की भावना से प्रेरित नहीं होता, रूसो का समुदाय जनहित की भावना से ओत-प्रोत रहता है। रूसो के अनुसार नैतिकता का प्रादुर्भाव केवल समाज में हो सकता है, समाज से बाहर नहीं, लॉक का समझौता ढीला है, जिससे व्यक्ति कभी भी बाहर निकल सकता है। रूसो का समझौता कठोर है, जिसके द्वारा व्यक्ति प्रतिबंधित रहता है, लॉक के समझौते से एक यांत्रिक राज्य की स्थापना होती है, जबकि रूसो के समझौते से एक जैविक राज्य की।

(B) समझौते सिद्धांत की मूल्यांकन (आलोचना) — रूसो के सामाजिक समझौते के सिद्धांत की कटु आलोचनायें की गई है। यद्यपि रूसो का सिद्धांत ऐतिहासिक तथ्यों की व्याख्या नहीं करता, इसलिए ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कटु आलोचना की गई है।

(i) आलोचकों का कथन है कि रूसो का यह सिद्धांत काल्पनिक है, क्योंकि इतिहास में इसतरह के अवसर कहीं नहीं मिलते।

(ii) आलोचकों का कहना है कि प्राकृतिक अवस्था से एकाएक राजनीतिक अवस्था में आना मनुष्यों के लिए संभव नहीं है, क्योंकि प्राकृतिक अवस्था में रहने वाली जंगली मनुष्यों में अचानक इतनी बुद्धि नहीं आ सकती है कि वे समझौते द्वारा राज्य का निर्माण करें।

(iii) इतिहासकारों का मत है कि प्राचीनकाल में समाज की इकाई व्यक्ति नहीं परिवार था। व्यक्ति के अधिकारों का कोई मूल्य नहीं था। इस स्थिति में व्यक्ति द्वारा स्वेच्छा से समझौता कर राज्य का करना असंभव प्रतीत होता है।

(iv) आलोचकों का कहना है कि रूसो इस तथ्य पर कोई प्रकाश नहीं डालता कि समझौता कब, कहां और कैसे हुआ। समझौते का कोई भाग अब तक जारी है या नहीं? समझौते में भाग लेने वाले कौन-कौन लोग थे? समझौता करने के लिए कितने व्यक्तियों की उपस्थिति आवश्यक थी?

(v) आलोचकों का कहना है कि यदि समझौते की बात सत्य मान ली जाये तो भी आधुनिक काल में समझौते की क्या यथोचित रह जाती है, जबकि बहुत सी सरकारें बनीं और बिगड़ी।

Scanned by CamScanner

(vi) रूसो ने जिसप्रकार सामाजिक समझौते का चित्रण किया है, उससे आलोचक असंतुष्ट होकर यह आलोचना करते है कि यह समझौता कानूनी दृष्टिकोण से भी गलत है। अत: रूसो के सामाजिक समझौते के सिद्धांत को आलोचक ऐतिहासिक एवं कानूनी दृष्टिकोण से गलत मानते है।

The End.

Scanned by CamScanner